Think
IAS...

दृष्टि
The Vision

Think
Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

आधुनिक भारत

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग–1

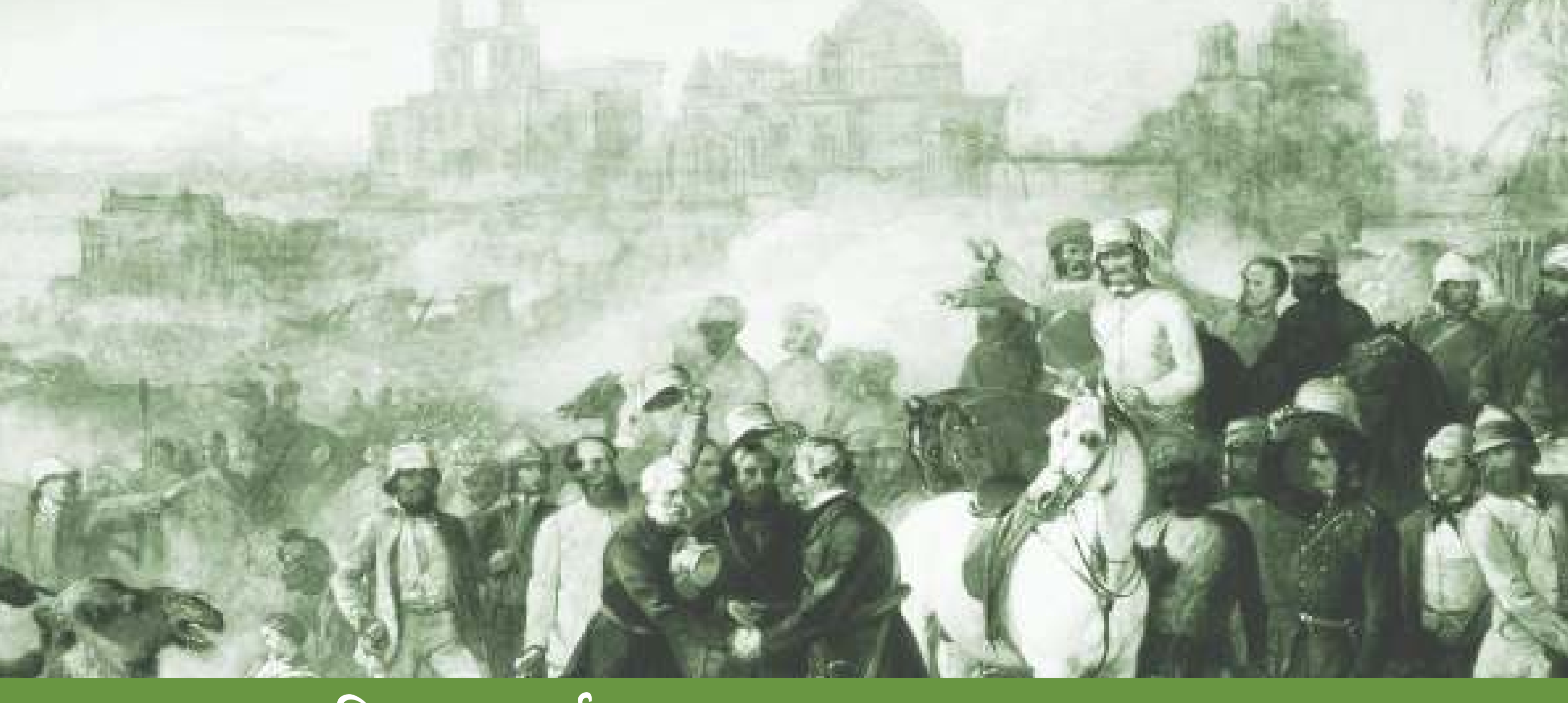

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम *(Distance Learning Programme)*

Code: MPPM08

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

आधुनिक भारत

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग-1

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 8750187501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1. यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन **5-11**

1.1 भारत में पुर्तगालियों का आगमन 5

1.2 भारत में डचों का आगमन 6

1.3 भारत में अंग्रेज़ों का आगमन 6

1.4 भारत में डेनिश का आगमन 7

1.5 भारत में फ्राँसीसियों का आगमन 7

1.6 आंग्ल-फ्राँसीसी संघर्ष 8

2. ब्रिटिश कंपनी द्वारा भारत विजय **12-33**

2.1 बंगाल 12

2.2 मैसूर 18

2.3 मराठा 22

2.4 सिंध 26

2.5 पंजाब 27

2.6 अवध 29

3. ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति **34-40**

3.1 सहायक संधि 34

3.2 व्यपगत सिद्धांत 35

3.3 देशी रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति 36

4. ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव **41-66**

4.1 ब्रिटिश आर्थिक नीति 41

4.2 भू-राजस्व व्यवस्था 46

4.3 विऔद्योगीकरण (हस्तशिल्प उद्योगों का पतन) 53

4.4 धन का निष्कासन 56

4.5 कृषि का वाणिज्यीकरण 59

4.6 ग्रामीण ऋणग्रस्तता 61

4.7 भारत में आधुनिक उद्योगों का विकास 62

5. ब्रिटिश शासन का भारतीय समाज पर प्रभाव **67-93**

5.1 ब्रिटिश भारत में शिक्षा का विकास 67

5.2 भारत में प्रेस का विकास 73

5.3 भारत में स्थानीय स्वशासन का विकास 79

5.4 ब्रिटिश भारत में रेलवे का विकास 81

5.5 अकाल नीति 83

5.6 लोक सेवाओं का विकास 84

5.7 विदेश नीति 87

6. ब्रिटिश शासन के प्रति भारतीय प्रतिक्रिया **94-124**

6.1 जनजातीय एवं नागरिक विद्रोह 94

6.2 1857 का स्वतंत्रता संग्राम 103

6.3 1857 का स्वतंत्रता संग्राम (मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में) 113

6.4 ब्रिटिश भारत में किसान आंदोलन 115

7. भारतीय पुनर्जागरण : सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन **125-145**

8. ब्रिटिशकालीन महत्त्वपूर्ण अधिनियम **146-159**

9. राष्ट्रवाद का उदय **160-170**

9.1 भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण 160

9.2 भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना 163

अध्याय
1

यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन (Arrival of European Companies in India)

प्राचीन काल में यूनानियों के भारत आगमन के साथ ही भारत और यूरोप के मध्य व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। पूर्व मध्यकाल में एशिया और यूरोप के बीच व्यापार अरब देशों के व्यापारियों की मध्यस्थता से होता था। यह व्यापार स्थल मार्ग से होता था, परंतु **1453 ई.** में **तुर्की साम्राज्य** का **कुस्तुनतुनिया** पर अधिकार हो जाने के उपरांत स्थलमार्ग से व्यापार अवरुद्ध हो गया। परिणामत: वैकल्पिक मार्ग के रूप में यूरोप के व्यापारी सुरक्षित समुद्री मार्ग की तलाश करने लगे। इसी क्रम में पुर्तगाल निवासी **वास्कोडिगामा** ने **केप ऑफ गुड होप** की यात्रा करते हुए भारत के नए समुद्री मार्ग की खोज की और जल्द ही भारत का समुद्री व्यापार जो अरब व्यापारियों के हाथों में था, उसे शक्ति के बल पर पुर्तगालियों ने अपने हाथ में ले लिया। 15**वीं शताब्दी** के उत्तरार्द्ध एवं **17वीं शताब्दी** के पूर्वार्द्ध के दौरान भारत में व्यापार के प्रारंभिक उद्देश्यों से प्रवेश करने वाली यूरोपीय कंपनियों ने यहाँ की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति को लगभग **350** वर्षों तक प्रभावित किया। इन विदेशी शक्तियों में **पुर्तगाली** प्रथम थे। इसके पश्चात् क्रमश: **डच, अंग्रेज़, डेनिश** तथा **फ्राँसीसी** आए।

यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन

- पुर्तगाली
- डच
- अंग्रेज़
- डेनिश
- फ्राँसीसी

1.1 भारत में पुर्तगालियों का आगमन *(Arrival of Portuguese in India)*

सर्वप्रथम पुर्तगाली व्यापारी **वास्कोडिगामा ने** 17 मई, 1498 को भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह **कालीकट** पहुँचकर भारत के लिये नए समुद्री मार्ग की खोज की। वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के तत्कालीन शासक **जमोरिन** (यह कालीकट के शासक की उपाधि थी) द्वारा किया गया। लेकिन तत्कालीन भारतीय व्यापार पर अधिकार रखने वाले अरब व्यापारियों ने पुर्तगालियों का विरोध किया। भारत में द्वितीय पुर्तगाली अभियान **पेड्रो अल्वारेज कैब्राल** के नेतृत्व में 1500 ई. में आया। प्रथम पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना 1503 ई. में कोचीन में की गई और द्वितीय फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में **कन्नूर** में की गई। इस प्रकार 15-16वीं सदी में पुर्तगालियों ने कालीकट, गोवा, दमन, दीव एवं हुगली के बंदरगाहों पर भी अपनी व्यापारिक कोठियाँ स्थापित कर लीं।

आरंभिक वर्षों में पुर्तगालियों का व्यापार पर एकाधिकार रहा। उन्होंने व्यापार के साथ शक्ति का भी प्रयोग किया, साथ ही एक **कॉर्ट्ज-आर्मेडा काफिला पद्धति** (Cortes-Armada Caravan System) के माध्यम से समुद्री व्यापार पर नियंत्रण कायम किया। फलस्वरूप समकालीन मुगल जहाज़रानी के लिये खतरा पैदा करके मुगल बादशाहों से व्यापार संबंधी छूट प्राप्त की।

पुर्तगालियों का व्यापारिक घटनाक्रम

- **1498 ई.** – वास्कोडिगामा ने कालीकट तक की यात्रा की।
- **1503 ई.** – पुर्तगालियों ने भारत में अपनी पहली फैक्ट्री की स्थापना **कोचीन** में की।
- **1505 ई.** – पुर्तगालियों ने भारत में दूसरी फैक्ट्री कन्नूर में स्थापित किया। **फ्रांसिस्को द अल्मेड़ा** को भारतीय क्षेत्र का गवर्नर बनाया गया।
- **1509 ई.** – अल्मेड़ा ने गुजरात, तुर्की एवं मिस्र के संयुक्त बेड़े को पराजित किया।
- **1510 ई.** – अल्फांसो-डी-अल्बुकर्क को 1509 ई. में वायसराय बनाया गया। अल्बुकर्क ने बीजापुर के सुल्तान को पराजित कर गोवा पर 1510 ई. में अधिकार कर लिया।
- **1511 ई.** – पुर्तगालियों ने मलाया द्वीप में स्थित मलक्का पर अधिकार कर लिया।
- **1530 ई.** – पुर्तगालियों ने गोवा को अपने भारतीय राज्य की औपचारिक राजधानी बनाई।

- फ्रेंच कंपनी की आर्थिक स्थिति, ब्रिटिश कंपनी की तुलना में कमज़ोर थी। ब्रिटिश कंपनी के पास व्यापार करने के लिये मध्य भारत, बंगाल, बंबई और मद्रास था, वही फ्रेंच कंपनी केवल दक्षिण भारत के क्षेत्रों तक ही सीमित थी। परिणामत: आर्थिक स्थिति मज़बूत होने के कारण ही अंग्रेज़ अपने युद्धों के भार को उठा सके।
- अंग्रेज़ों का सैनिक संगठन फ्राँसीसियों की तुलना में श्रेष्ठ था।
- फ्राँसीसी कंपनी के अधिकारियों में दूरदर्शिता का अभाव रहा, यथा- डूप्ले की वापसी, बूर्डोने में राजनीतिक दूरदर्शिता का अभाव और लाली की अति आक्रमकता जैसे कारक पतन का कारण बने।
- बंगाल में चंद्रनगर के फ्राँसीसी अधिकारियों ने नवाब सिराजुद्दौला का साथ नहीं दिया, इससे बंगाल में अंग्रेज़ अपना आधिपत्य स्थापित कर सके।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि आंग्ल-फ्राँसीसी युद्धों में फ्राँसीसी पराजय में आर्थिक, राजनैतिक व सामरिक सभी पक्षों की भूमिका रही; फ्राँसीसियों की तुलना में अंग्रेज़ों के ये सभी पक्ष मज़बूत साबित हुए।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- 17 मई, 1498 को वास्कोडिगामा ने भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट बंदरगाह पहुँचकर भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग की खोज की।
- 1505 ई. में **फ्रांसिस्को द अल्मेड़ा** भारत में प्रथम पुर्तगाली वायसराय बनकर आया।
- अल्बुकर्क ने 1510 ई. में बीजापुर के शासक **यूसुफ आदिल शाह** से **गोवा** को जीता।
- पुर्तगालियों ने अपनी पहली व्यापारिक कोठी **कोचीन** में स्थापित की।
- भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक अल्फांसो-डी-अलबुर्क को माना जाता है।
- पुर्तगाली अपने आप को "सागर के स्वामी" कहते थे।
- **"ब्लू वाटर पॉलिसी"** (Blue Water Policy) की नीति को पुर्तगालियों ने लागू किया था।
- 1596 ई. में भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक **कारनेलिस डी हाउटमैन** था।
- 1761 ई. में अंग्रेज़ों ने पांडिचेरी को फ्राँसीसियों से छीन लिया।
- 1763 ई. में हुई पेरिस संधि के द्वारा अंग्रेज़ों ने **चंद्रनगर** को छोड़कर शेष अन्य प्रदेशों को लौटा दिया, जो 1749 ई. तक फ्राँसीसी कब्ज़े में थे, ये प्रदेश भारत की आज़ादी तक फ्राँसीसियों के कब्ज़े में रहे।
- 1698 ई. में औरंगज़ेब के दरबार में ब्रिटिश कंपनी का दूत **विलियम नॉरिस** उपस्थित था।
- भारत में **गोथिक स्थापत्य कला** की स्थापना का श्रेय पुर्तगालियों को जाता है।
- भारत में जहाँगीर से मिलने 'टॉमस रो' जहाँगीर के पीछे अजमेर से मांडू आया था।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के अंग्रेज़ गवर्नर **सर जॉन चाइल्ड** को औरंगज़ेब द्वारा भारत से निष्कासित किया गया था।
- अल्बुकर्क **सती प्रथा** का विरोध करने वाला प्रथम यूरोपीय व्यक्ति था।
- 1805 ई. में अंग्रेज़ों ने डचों को **चिनसूरा** व **मलक्का** के बदले **सुमात्रा द्वीप** देकर भारत पर उनका प्रभाव लगभग समाप्त कर दिया।
- **कैप्टन हॉकिंस** को मुगल बादशाह जहाँगीर ने 400 का मनसब प्रदान किया था।
- **पुर्तगालियों** के विरुद्ध शाहजहाँ ने 1632 ई. में हुगली नगर का घेरा डाला।
- भारत में यूरोपीय शक्तियों द्वारा अपना पहला किला गोवा में निर्मित किया गया।
- पेड्रो अल्वारेज कैब्राल भारत आने वाले द्वितीय पुर्तगाली (वाणिज्यिक) अभियान के नेता थे।
- सूती वस्त्र मुगल भारत में अंग्रेज़ी व्यापार की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु थी।
- 1632 ई. के अंग्रेज़ों को प्राप्त फरमान को **सुनहरा फरमान** कहते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रारंभिक दौर में वेस्टर्न प्रेसीडेंसी कहाँ थी? **M.P.P.C.S. (Pre) 2018**
   (a) सूरत (b) सतारा
   (c) बॉम्बे (d) पणजी
2. भारत में इंग्लैंड का कौन-सा दूत जहाँगीर के पीछे अजमेर से मांडू आया? **M.P.P.C.S. (Pre) 2010**
   (a) क्लाइव (b) टॉमस रो
   (c) लॉर्ड एस्टर (d) क्लाइड
3. ईस्ट इंडिया कंपनी के किस अंग्रेज़ गवर्नर को औरंगज़ेब द्वारा भारत से निष्कासित किया गया? **M.P.P.C.S. (Pre) 2008**
   (a) आंगियार (b) सर जॉन चाइल्ड
   (c) सर जॉन गेयर (d) सर निकोलस वेट
4. अंग्रेज़ों का भारत आने के पीछे क्या मंतव्य था?
   (a) व्यापार
   (b) धार्मिक प्रचार
   (c) तकनीकी प्रचार
   (d) अपनी श्रेष्ठता स्थापित करना
5. मुगल बादशाह जहाँगीर ने किस अंग्रेज़ यात्री को 400 का मनसब प्रदान किया था।
   (a) हॉकिंस (b) सर टॉमस रो
   (c) थॉमस एल्डवर्थ (d) जॉन मिल्डेनहाल
6. जेम्स प्रथम का राजदूत जो जहाँगीर के दरबार में आया-
   (a) फादर हेरास (b) बारबोसा
   (c) सर टॉमस रो (d) मॉर्नियर विलियम्स
7. वांडीवाश की लड़ाई अंग्रेज़ों के साथ किसके संबंध के लिये महत्त्वपूर्ण थी?
   (a) डच (b) पुर्तगाली
   (c) फ्राँसीसी (d) मराठे
8. भारत में गोथिक स्थापत्य कला की स्थापना का श्रेय जाता है–
   (a) पुर्तगाली (b) डच
   (c) अंग्रेज़ (d) फ्राँसीसी
9. 'सेंट थोमे' का युद्ध कहा जाता है–
   (a) प्रथम कर्नाटक युद्ध (b) द्वितीय कर्नाटक युद्ध
   (c) तृतीय कर्नाटक युद्ध (d) डचों का युद्ध

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (b) 4. (a) 5. (a) 6. (c) 7. (c) 8. (a) 9. (a)

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 10-20 शब्दों/एक-दो पंक्तियों में दीजिये)

1. कॉर्ट्ज-आर्मेडा
2. केप ऑफ गुड होप
3. बेदारा का युद्ध

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 50 शब्दों या 5 से 6 पंक्तियों में दीजिये)

1. ऑक्सा-ला-शैपेल की संधि
2. वांडीवाश का युद्ध
3. कौन यूरोपीय व्यापारी सर्वप्रथम भारत में आया?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100/200/300 शब्दों में दीजिये)

1. कर्नाटक युद्ध किनके बीच हुए? इनका क्या परिणाम हुआ? **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
2. आंग्ल-फ्राँसीसी संघर्ष पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
3. 'सेंट थोमे के युद्ध' के कारण और परिणाम की चर्चा कीजिये।
4. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना में 'वांडीवाश के युद्ध' के महत्त्व पर प्रकाश डालिये।

अध्याय
2

ब्रिटिश कंपनी द्वारा भारत विजय (India Conquest by British Company)

अंग्रेज़ों की भारत विजय के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों द्वारा मुख्यत: दो मत प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रथम मतानुसार, यह विजय निरुद्देश्य, आकस्मिक एवं अनभिप्रेत थी। इस मत के प्रणेताओं का मुख्य तर्क यह है कि ईस्ट इंडिया कंपनी एक व्यापारिक कंपनी थी जो राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं से बहुत दूर थी। इसका मुख्य उद्देश्य व्यापार करना था, किंतु संयोगवश यहाँ की राजनीतिक परिस्थितियों ने उन्हें भारतीय राजनीतिक संघर्ष के लिये प्रेरित किया। परिणामस्वरूप, वे भारतीय राज्यों से युद्ध कर उनका विलय करने के लिये बाध्य हो गए। उन्हें अपनी व्यापारिक महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति एवं अपने व्यक्तिगत हितों की सुरक्षा के लिये भी यहाँ की क्षेत्रीय शक्तियों से युद्ध करना पड़ा। परिणामत: उन्होंने भारतीय साम्राज्य हासिल कर लिया। दूसरे मतानुसार, अंग्रेज़ों द्वारा एक निश्चित एवं सुनियोजित योजना के तहत भारत का अधिग्रहण किया गया। इस मत के समर्थन में यह तर्क दिया जाता है कि अंग्रेज़ों ने एक निश्चित योजना के अनुसार संगठित होकर एक व्यापारिक कंपनी का गठन किया एवं उसके बाद भारत में प्रवेश किया। उन्होंने धीरे-धीरे अपनी कूटनीतिक चालों का प्रयोग कर अपने राजनीतिक अधिकारों में बढ़ोतरी की तथा अपनी आक्रामक नीतियों से भारतीय राज्यों का अधिग्रहण कर लिया। इस प्रकार साम, दाम, दण्ड, भेद जैसी नीतियों का प्रयोग करते हुए उन्होंने भारतीय साम्राज्य को हासिल कर लिया।

बिना किसी पूर्वाग्रह के विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि ये दोनों विचार अतिशयोक्तिपूर्ण हैं तथा तर्कसंगत नहीं हैं। यदि व्यवस्थित रूप से विस्तृत विवेचना की जाए तो इन दोनों मतों में तार्किक विश्लेषण का अभाव है। अत: यह कहना ही सही होगा कि अंग्रेज़ों द्वारा भारतीय राज्यों का अधिग्रहण संयोगवश शुरू हुआ, किंतु कुछ समय के बाद अंग्रेज़ों की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएँ जागृत हो उठीं। परिणामस्वरूप उन्होंने भारतीय राज्य की कल्पना के उद्देश्य से प्रेरणा लेकर अपनी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा विदेश नीतियों का निर्माण किया। अंग्रेज़ों ने उस दिशा में भी अपने कदम बढ़ाए जो भारतीय राज्यों के विरुद्ध युद्ध करने एवं उनके विलय के उद्देश्यों से प्रेरित थी, उदाहरणार्थ- लॉर्ड वेलेजली की 'सहायक संधि', लॉर्ड हेस्टिंग्स की 'आक्रामक नीति' तथा लॉर्ड डलहौज़ी की 'हड़प नीति' इत्यादि ऐसे ही उद्देश्य थे।

भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से 17वीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्रवेश किया। कंपनी को भारतीय व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करने के लिये अन्य यूरोपीय कंपनियों तथा भारतीय राज्यों-बंगाल, मैसूर, मराठा, सिंध, पंजाब और अवध के विरोध का सामना करना पड़ा, किंतु भारतीय राज्यों के आपसी मतभेद और षड्यंत्रों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को उनके ऊपर अपना वर्चस्व स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान एवं अवसर प्रदान किया। अंग्रेज़ों द्वारा एक लम्बी अवधि के बाद भारतीय राज्यों का विलय पूर्ण हुआ। इसमें कई कारकों ने सहयोग दिया जो कि निम्नवत हैं-

- यूरोप में हो रहे तत्कालीन राजनीतिक परिवर्तन
- शीघ्रातिशीघ्र लाभ अर्जित करने की आकांक्षा
- भारत की अस्थिर राजनीतिक परिस्थितियाँ
- राष्ट्र के प्रति शूरवीरता की भावना
- ब्रिटिश प्रशासकों एवं गवर्नर जनरलों की व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाएँ

2.1 बंगाल *(Bengal)*

सभी यूरोपीय शक्तियों में अपनी सर्वोच्चता साबित करने के बाद अंग्रेज़ों ने भारत पर आधिपत्य की शुरुआत बंगाल से की। बंगाल मुगलकाल के सबसे समृद्ध प्रांतों में गिना जाता था। अत: बंगाल पर नियंत्रण स्थापित कर वहाँ की धन-संपत्ति पर नियंत्रण स्थापित करना ब्रिटिश साम्राज्यवादी हितों के अनुकूल था। क्योंकि अंग्रेज़ों को दक्षिण में मैसूर और मराठों की बढ़ती शक्ति को नियंत्रित करने के लिये धन और कच्चे माल की आवश्यकता थी जो बंगाल से पूरी की जा सकती थी। साथ ही बंगाल पर मुगल नियंत्रण भी कमज़ोर था। इस प्रकार बंगाल की आर्थिक समृद्धि एवं राजनीतिक अस्थिरता ने अंग्रेज़ों को बंगाल पर नियंत्रण स्थापित करने के लिये प्रेरित किया।

अध्याय
3

ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति (British Imperialistic Policy)

भारत के प्रमुख राज्यों पर अपनी सत्ता की स्थापना के बाद ब्रिटिश कंपनी ने उसे सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु विभिन्न औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी नीतियों का सहारा लिया। इन नीतियों के द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने हितों की पूर्ति तो की ही, साथ ही भारतीयों को अपने अधीन कर लिया।

3.1 सहायक संधि *(Subsidiary Alliance)*

सहायक संधि प्रणाली का सर्वप्रथम प्रयोग फ्राँसीसी गवर्नर डूप्ले ने किया था। उसने सैनिक सहायता देने के बदले भारतीय नरेशों से धन लेने की प्रथा शुरू की। अंग्रेज़ों के शासन में भी क्लाइव एवं उसके बाद के गवर्नर जनरलों के द्वारा इस प्रणाली का प्रयोग किया गया। सहायक संधि को व्यावहारिक रूप वेलेजली ने ही दिया।

वेलेजली की सहायक संधि प्रणाली *(Subsidiary alliance system of Wellesley)*

वेलेजली का मुख्य उद्देश्य कंपनी को भारत की सर्वोच्च शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करना था और इसमें मुख्य बाधा थी फ्राँसीसियों का बढ़ता प्रभाव, क्योंकि फ्राँस की क्रांति के उपरांत नेपोलियन भारत पर अधिकार करने के प्रयास में था साथ ही टीपू जैसे भारतीय शासक फ्राँसीसियों से गठबंधन कर रहे थे। हालाँकि अवध तथा कर्नाटक के राज्य कंपनी के संरक्षण में थे। कंपनी की आर्थिक स्थिति भी सुधर चुकी थी, फिर भी एक ऐसी राजनीतिक प्रणाली की ज़रूरत थी जो भारतीय शक्तियों से फ्राँसीसियों को दूर कर सके। साथ ही, भारतीयों को ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं का ग्राहक बना दे। वेलेजली की यह साम्राज्यवादी योजना सहायक संधि के रूप में सामने आई।

सहायक संधि की विशेषताएँ *(Features of subsidiary alliance)*

- देशी रियासतें एक ब्रिटिश रेज़िडेंट रखेंगी जो शासन-प्रबंधन में परामर्श देगा।
- भारतीय रियासतों के आंतरिक शासन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।
- वह देशी रियासत, जो संधि स्वीकार करेगी, कंपनी की स्वीकृति के बिना अपने राज्य में शत्रु राज्य के लोगों को शरण या नौकरी नहीं देगी।
- देशी रियासतों की रक्षा के लिये कंपनी वहाँ अंग्रेज़ी सेना रखेगी, जिसका खर्च उस रियासत को ही उठाना पड़ेगा। सेना के खर्च के लिये नकद धनराशि या राज्य का कुछ इलाका कंपनी को सौंपना होगा।
- देशी रियासत कंपनी की अनुमति के बिना किसी अन्य राज्य से युद्ध, संधि या मैत्री नहीं कर सकेगी अर्थात् वह अपनी विदेश नीति कंपनी के सुपुर्द कर देगी।

सहायक संधि का देशी रियासतों पर प्रभाव *(Impact of subsidiary alliance on princely states)*

- ब्रिटिश सैन्य सुरक्षा के कारण भारतीय रजवाड़े विलासी हो गए। उनमें स्वाभिमान एवं उत्तरदायित्व का कोई अंश शेष नहीं रहा। सुरक्षा की चिंता से मुक्त होकर वे तानाशाही करने लगे। जनता दुःखी होकर विद्रोह करने लगी, परंतु उन पर कंपनी का हाथ होने के कारण विद्रोह सफल नहीं हो पाया।
- देशी रियासतों के शासक नाममात्र के शासक रह गए, उनकी सार्वभौम शक्ति समाप्त हो गई।
- हालाँकि अंग्रेज़ रेज़िडेंट को आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप का अधिकार नहीं था, परंतु वे इसका उल्लंघन करते थे और निरंतर हस्तक्षेप करते थे। फलतः शासकों की रुचि शासन में कम हो गई।

अध्याय 4

ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव (Impact of British Rule on Indian Economy)

भारतीय अर्थव्यवस्था 18वीं शताब्दी के आरंभिक दिनों में ग्राम आधारित थी, जो स्वावलंबी एवं स्वशासी होने के साथ-साथ अपनी आवश्यकतानुसार सभी वस्तुओं का उत्पादन करती थी। गाँवों का संबंध केवल राज्य को कर देने से होता था तथा ग्रामीण समाज सदैव की भाँति मंद गति से चलता रहता था, भले ही कोई शासक या वंश परिवर्तित हो गया हो। यूरोपियों ने एशियाई समाज के इस अपरिवर्तनशील रूप के बारे में कहा था कि **यह नश्वर संसार में भी अनश्वर है।** दूसरी ओर, भारत में उत्पादित वस्तुओं की मांग पूरे विश्व में बढ़ने लगी, जैसे- आगरा, लाहौर, मुर्शिदाबाद तथा गुजरात का रेशमी कपड़ा, कश्मीर की ऊनी शॉल, ढाका, अहमदाबाद, मसुलीपट्टनम का सूती कपड़ा, सोने-चाँदी के आभूषण, धातु का सामान, हथियार आदि। इसके साथ ही नगरों में भी धीरे-धीरे हस्तशिल्प उद्योग बढ़ने लगे थे। किंतु मुगल साम्राज्य का विघटन होने के कारण आर्थिक-व्यवस्था का भी विघटन होने लगा तथा भारतीय राजाओं के आपसी युद्धों से आर्थिक क्रियाकलापों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों ने इन युद्धों का लाभ उठाकर राजनीति में हस्तक्षेप किया तथा 1757 ई. की **प्लासी विजय** के पश्चात् ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी धीरे-धीरे साम्राज्य की **स्वामिनी** बन गई। यूरोपीय कंपनी यहीं नहीं रुकी बल्कि विजित क्षेत्रों पर अपना नियत्रंण और भी सुदृढ़ करने के लिये आर्थिक-प्रशासनिक नीतियों में समयानुसार परिवर्तन करती रही।

4.1 ब्रिटिश आर्थिक नीति *(British Economic Policy)*

अंग्रेज़ों द्वारा आर्थिक-प्रशासनिक नीतियों को लागू करने के दौरान सदैव साम्राज्यवाद के लक्ष्यों, जैसे- कंपनी के मुनाफे में वृद्धि, विजित क्षेत्रों पर नियंत्रण आदि को ध्यान में रखा गया। अंग्रेज़ों की आर्थिक-प्रशासनिक नीतियों को **जॉन सुलिवन** की पंक्ति द्वारा समझा जा सकता है-

> "हमारी प्रणाली एक ऐसे स्पंज के रूप में काम करती है जो गंगा के किनारों से प्रत्येक अच्छी वस्तु ले लेती है फिर टेम्स के किनारों पर निचोड़ देती है।"

भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण *(Different stages of British colonialism in India)*

उपनिवेशवाद एक ऐसी संरचना होती है, जिसके माध्यम से किसी भी देश का आर्थिक शोषण तथा उत्पीड़न होता है और आर्थिक लाभ के साथ-साथ विदेशी जनसंख्या को विदेशी भूमि पर बसाना भी शामिल होता है। **औद्योगिक क्रांति** ने उपनिवेशवादी-व्यवस्था को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया और भारत भी ब्रिटेन का उपनिवेश इसी व्यवस्था के परिणामस्वरूप बना। भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण इंग्लैंड के आर्थिक ढाँचे से प्रभावित होते रहे इसलिये प्रत्येक चरण में गुणात्मक परिवर्तन होते रहे। इसी परिवर्तन के आधार पर ही भारत में उपनिवेशवाद को तीन प्रमुख चरण में विभाजित किया गया है-

उपनिवेशवाद के चरण

- वाणिज्यिक पूंजीवादी चरण (1757-1813 ई.)
- औद्योगिक पूंजीवादी चरण (1813-1858 ई.)
- वित्तीय पूंजीवादी चरण (1858 ई. के बाद)

अध्याय 5

ब्रिटिश शासन का भारतीय समाज पर प्रभाव (Impact of British Rule on Indian Society)

ब्रिटिश शासन ने भारत की आर्थिक व्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक व्यवस्था को भी गंभीर रूप से प्रभावित किया। ब्रिटिश शासन के साथ ही भारतीय समाज में एक नई सामाजिक व्यवस्था सामने आई जिसका आधार जाति व श्रम न होकर व्यावसायिक उपलब्धियों तथा मुक्त प्रतिस्पर्द्धा पर आधारित नई आर्थिक शक्तियाँ थीं। अंग्रेज़ों ने अपने राज्य विस्तार एवं प्रशासनिक तंत्र के साथ-साथ भारत के संदर्भ में सामाजिक-सांस्कृतिक नीतियों का विकास किया, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक हितों के अनुसार समय-समय पर परिवर्तित होती रहीं। ब्रिटिश शासन ने समाज के विभिन्न वर्गों, यथा-ज़मींदार वर्ग, देशी राजे-रजवाड़े, कृषक वर्ग, पूंजीपति वर्ग, मज़दूर वर्ग, नारी वर्ग, आदिवासी वर्ग आदि के साथ ही भारत की शिक्षा प्रणाली, प्रेस, स्थानीय स्वशासन, लोक-सेवा तथा विदेश नीति को भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया। भारत में ब्रिटिश शिक्षा नीति ब्रिटिश औपनिवेशिक हितों के अनुकूल परिचालित होती थी, क्योंकि अंग्रेज़ों की शिक्षा नीति का उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो ब्रिटिश औद्योगिक बाज़ार का भारत में विस्तार कर सके। ब्रिटिश शासनकाल के दौरान भारत में मानवजनित अकालों की संख्या बढ़ी किंतु अंग्रेज़ों द्वारा बनाई गई अकाल नीति का ज़ोर केवल उत्पादन तथा कार्य-दिवस पर ही था, श्रमिकों की सुविधाओं पर नहीं। इस काल में लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाने वाला मीडिया, प्रेस, जनसंचार साधन आदि का भी संकुचित विकास हुआ। सिविल सेवाओं में तो भारतीयों को इस परीक्षा के योग्य ही नहीं समझा जाता था, किंतु कुछ राष्ट्रवादी नेताओं के अथक प्रयत्नों से भारतीयों को भी सिविल सेवा की परीक्षा देने का मौका मिला।

5.1 ब्रिटिश भारत में शिक्षा का विकास *(Development of Education in British India)*

ईस्ट इंडिया कंपनी प्रारंभ में एक विशुद्ध व्यापारिक कंपनी थी जिसका उद्देश्य व्यापार करके केवल अधिक-से-अधिक लाभ कमाना था। 1764 ई. के बक्सर युद्ध तक कंपनी की कोई शिक्षा नीति नहीं थी, फिर भी ईसाई मिशनरी, जो व्यापारियों के साथ-साथ भारत में आ गए थे, ने भारतीय हिंदू-मुस्लिम समुदाय के सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाज़ों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। **हिंदुओं और मुसलमानों को संबोधन** शीर्षक से छापी गई पुस्तिका में अंग्रेज़ मिशनरियों द्वारा मुहम्मद साहब को एक **झूठा-पैगंबर** कहा गया तथा हिंदू धर्म को केवल मूर्ति-पूजा, अंधविश्वास तथा अज्ञान का पुंज कहा गया था। इन मिशनरियों का मुख्य उद्देश्य हिंदुओं और मुसलमानों को ईसाई बनाना था। कई विदेशी सहायता-प्राप्त पादरियों ने भारतीय समाज के पिछड़े हुए और कमज़ोर वर्गों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये धर्मार्थ औषधालय, अनाथालय और पाठशालाएँ भी खोलीं जहाँ नि:शुल्क विद्या के अतिरिक्त भोजन और वस्त्र भी दिये जाते थे। दूसरी ओर, शिक्षा के प्रोत्साहन एवं विकास हेतु व्यक्तिगत स्तर पर भी कुछ प्रयास किये गए। ऐसे प्रयासों के कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं:-

- 1781 ई. में **वारेन हेस्टिंग्स** द्वारा **कलकत्ता मदरसा** स्थापित किया गया, जिसका उद्देश्य मुस्लिम कानूनों तथा इससे संबंधित अन्य विषयों की शिक्षा देना था।
- 1791 ई. में बनारस के ब्रिटिश रेज़ीडेंट **जोनाथन डंकन** के प्रयासों से हिंदू-विधि एवं दर्शन का अध्ययन करने के लिये **बनारस में संस्कृत कॉलेज** की स्थापना की गई।
- 1800 ई. में लॉर्ड वेलेजली द्वारा असैनिक अधिकारियों की शिक्षा के लिये **फोर्ट विलियम कॉलेज** की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य कॉलेज में अधिकारियों को विभिन्न भारतीय भाषाओं तथा भारतीय रीति-रिवाज़ों की शिक्षा प्रदान करना था, किंतु 1802 ई. में डायरेक्टरों के आदेश पर यह कॉलेज बंद कर दिया गया।
- 1784 ई. में हेस्टिंग्स के सहयोगी **सर विलियम जोंस** ने **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल** की स्थापना की, जिसके सदस्य चार्ल्स **विल्किंसन** ने पहली बार मूल **श्रीमद्भगवद्गीता** का संस्कृत से अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। 1787 ई. में विल्किंसन द्वारा ही **हितोपदेश** का भी अनुवाद किया गया।

अध्याय
6

ब्रिटिश शासन के प्रति भारतीय प्रतिक्रिया (Indian Reaction to British Rule)

ब्रिटिश शासन ने भारत की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन किये तथा ब्रिटिश नीतियों ने भारत को इंग्लैंड का उपनिवेश बना दिया, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अनेक आंदोलन, विद्रोह तथा सैनिक विप्लव हुए। इन सभी आंदोलनों तथा विद्रोहों के प्रमुख कारणों में भारतीय शासन में विदेशी हस्तक्षेप, प्रशासनिक परिवर्तनों का होना, अर्थव्यवस्था का नष्ट होना, ग्रामीण निर्भरता की समाप्ति तथा अंग्रेज़ों की करों से संबंधित अनेक भू-राजस्व नीतियाँ आदि शामिल थे। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह तथा आंदोलन उनकी बर्बरता तथा निरंकुशता का परिणाम था जिसने भारतीय जन-मानस को झकझोर दिया, फलतः वह इन अत्याचारों के खिलाफ उठ खड़ा हुआ। इन आंदोलनों को इस प्रकार समझा जा सकता है-

6.1 जनजातीय एवं नागरिक विद्रोह *(Tribal and Civilian Revolt)*

ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के प्रतिक्रियास्वरूप सबसे पहले जनजातीय विद्रोह हुए। जनजातीय लोग भारतीय समाज का हिस्सा थे किंतु उनके रीति-रिवाज़ व परंपराएँ समाज के अन्य वर्गों से अलग थीं। जब ब्रिटिश साम्राज्य का प्रसार जनजातीय क्षेत्रों में हुआ तो जंगली उत्पादों तथा संसाधनों ने औपनिवेशिक सरकार को अपनी ओर आकर्षित किया, परिणामस्वरूप उनका दोहन आरंभ हुआ। इससे जनजातीय असंतोष को बल मिला। अतः स्पष्ट है कि अंग्रेज़ी शासन के दौरान होने वाले आदिवासी जनजातीय विद्रोहों की पृष्ठभूमि बढ़ते हुए आर्थिक शोषण, प्रशासनिक जटिलताओं एवं सामाजिक असंतोष ने तैयार की। भौगोलिक स्थिति के अनुसार जनजातीय विद्रोहों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

जनजातीय एवं नागरिक विद्रोह

पूर्वी भारत तथा बंगाल में विद्रोह
- संन्यासी विद्रोह
- कोल विद्रोह
- संथाल विद्रोह
- अहोम विद्रोह
- खासी विद्रोह
- पागलपंथी विद्रोह
- फराजी विद्रोह
- मुंडा विद्रोह

पश्चिम भारत में विद्रोह
- रामोसी विद्रोह
- कच्छ का विद्रोह
- भील विद्रोह
- सूरत का नमक आंदोलन
- गडकरी विद्रोह
- सावंतवाड़ी विद्रोह

दक्षिण एवं मध्य भारत में विद्रोह
- विजयनगर के राजा का विद्रोह
- वेलूथंपी का विद्रोह
- बुंदेला विद्रोह
- पाड्यगारों का विद्रोह

पूर्वी भारत तथा बंगाल में विद्रोह *(Revolt in Eastern India and Bengal)*

संन्यासी विद्रोह (1770-1820, अन्य स्रोतों में 1763-1800 ई.)

प्रमुख क्षेत्र - बंगाल

प्रमुख नेता - गिरि संप्रदाय के संन्यासी मंजू शाह और देवी चौधरानी

- बंगाल में अंग्रेज़ी राज्य स्थापित होने से वहाँ एक नई अर्थव्यवस्था की शुरुआत हुई, जिसके कारण बंगाल के ज़मींदार, कृषक तथा शिल्पी आदि की स्थिति दयनीय हो गई। बंगाल में पड़े (1770 ई. का) भीषण अकाल तथा कंपनी के पदाधिकारियों की कठोरता को लोगों ने विदेशी राज्य की देन समझा।

अध्याय
7

भारतीय पुनर्जागरण : सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन (Indian Renaissance : Social-Religious Reform Movements)

18-19वीं शताब्दी का भारतीय समाज अंधविश्वास, जाति-व्यवस्था, वर्ण-भेद आदि रूढ़ियों के जाल में जकड़ा हुआ था। भारतीय समाज जाति प्रथा के आधार पर दो वर्गों, उच्च-वर्ग एवं निम्न वर्ग में बँटा हुआ था जिसके कारण भारत की बहुसंख्यक जनता तथा उच्च वर्गों के बीच एक दरार पैदा हो गई थी साथ ही अंग्रेज़ों की औपनिवेशिक नीतियों ने भी भारतीय समाज को बहुत प्रभावित किया। परिणामस्वरूप 19वीं शताब्दी में बौद्धिक एवं सांस्कृतिक उथल-पुथल मची। इस दौरान पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से भारतीयों के मन में एक नई चेतना का संचार हुआ तथा लोग अंग्रेज़ों के वास्तविक चरित्र को समझने लगे थे। भारतीय विद्वानों ने भी अपने समाज की कमज़ोरी को पहचानकर उन्हें दूर करने के उपाय खोजे। लोग धीरे-धीरे यह मानने लगे कि अपने समाज में फिर से प्राण फूँकने के लिये मानवतावाद, विवेक पर आधारित सिद्धांत, आधुनिक विज्ञान, पश्चिमी विचार आदि तत्त्वों को आत्मसात करना पड़ेगा। 19वीं शताब्दी तक बुद्धिजीवी वर्ग इस बात में विश्वास करने लगा था कि सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन की तत्काल ज़रूरत है।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन के कारण

सामाजिक | सांस्कृतिक | आर्थिक | राजनीतिक

सामाजिक कारण

- ब्रिटिश शासन में अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रसार से भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग ने पाश्चात्य उदारवादी विचारधारा से प्रभावित होकर भारतीय सामाजिक ढाँचे एवं संस्कृति में विद्यमान कमज़ोरियों को दूर करने का प्रयास किया।
- ब्रिटिश सरकार द्वारा समाज-सुधार के लिये बनाए गए कानून भी सामाजिक-आर्थिक सुधार आंदोलन का कारण बने।
- ईसाई मिशनरियों के द्वारा ईसाई संस्कृति के प्रसार पर बल, प्रतिक्रिया स्वरूप भारतीयों द्वारा अपनी संस्कृति एवं धर्म के प्रति पुनरुत्थान प्रक्रिया पर बल दिया गया।
- प्रेस, समाचार-पत्र, पत्र-पत्रिकाओं आदि के द्वारा अंग्रेज़ों की व्यवहारहीनता, शोषण एवं क्रूरता का ज्ञान भारतीयों को हुआ। अत: भारतीयों ने अपने समाज व धर्म की रक्षा हेतु प्रयत्न आरंभ किये।

सांस्कृतिक कारण

- प्राच्यवादियों ने भारतीय अतीत और गरिमा का गुणगान किया और फिर अतीत की गरिमा पर बल देकर भारतीयों का ध्यान अपनी संस्कृति और परंपरा की ओर आकृष्ट किया।
- 19वीं शताब्दी में इस सांस्कृतिक जागरण के प्रस्फुटन का एक कारण पश्चिमी देशों द्वारा प्रचारित की जा रही अपनी जातीय, भाषायी एवं सांस्कृतिक श्रेष्ठता के विरुद्ध भारतीयों की प्रतिक्रिया भी थी।

आर्थिक कारण

- 1813 ई. के एक्ट के द्वारा मुक्त व्यापार की नीति तथा भारतीय समाज में हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन का उदय हुआ।

राजनीतिक कारण

- आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव व विदेशी शक्ति द्वारा पराजित होने से उत्पन्न चेतना ने उन्नीसवीं सदी में एक नई जागृति को जन्म दिया।

अध्याय
8

ब्रिटिशकालीन महत्त्वपूर्ण अधिनियम
(Important Act of British Period)

1765 ई. में मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय के एक फरमान से ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हो गई और उसके बदले कंपनी ने **26 लाख रुपए** वार्षिक मुगल सम्राट को देना स्वीकार किया। इसका श्रेय **लॉर्ड क्लाइव** को प्राप्त है। बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा में कंपनी द्वारा दीवानी ग्रहण करने के पश्चात् इन क्षेत्रों में प्रशासनिक अव्यवस्था तथा अराजकता का वातावरण व्याप्त हो गया। कंपनी के कर्मचारी जनता का अधिकाधिक शोषण करने लगे क्योंकि वे शीघ्र ही धनाढ्य बनकर इंग्लैंड वापस जाना चाहते थे। विस्तृत प्रदेश पर कब्जा, सेना का रख-रखाव तथा विभिन्न युद्धों से कंपनी पर आर्थिक बोझ बढ़ जाने के कारण वह अपने कर्मचारियों के वेतन का भुगतान करने में भी असमर्थता का अनुभव कर रही थी। 1772 ई. में तो आर्थिक अस्थिरता बहुत बढ़ गई थी, इसीलिये ब्रिटिश संसद ने कंपनी के विविध कार्यों की जाँच के लिये एक प्रवर समिति तथा एक गुप्त समिति गठित की। 1773 ई. में गुप्त समिति ने अपना अंतिम प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस प्रतिवेदन के फलस्वरूप **लॉर्ड नार्थ** ने 18 मई को ब्रिटिश संसद में अपना प्रसिद्ध ऐतिहासिक विधेयक प्रस्तुत किया, जो बाद में **रेग्यूलेटिंग एक्ट** कहलाया।

रेग्यूलेटिंग एक्ट, 1773 *(The Regulating Act, 1773)*

भारत के संवैधानिक इतिहास में 1773 ई. का रेग्यूलेटिंग एक्ट, जो गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के काल में पारित हुआ था, विशेष महत्त्व रखता है। यह अधिनियम भारत में कंपनी के प्रशासन पर ब्रिटिश संसदीय नियंत्रणों के प्रयासों की शुरुआत थी। अब कंपनी के शासनाधीन क्षेत्रों का प्रशासन कंपनी के व्यापारियों का निजी मामला नहीं रहा। 1773 ई. के रेग्यूलेटिंग एक्ट से भारत में कंपनी के शासन के लिये पहली बार लिखित संविधान (Written Constitution) प्रस्तुत किया गया। रेग्यूलेटिंग एक्ट के प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित हैं-

- इस अधिनियम (एक्ट) के द्वारा 1774 ई. में कलकत्ता में एक **उच्चतम न्यायालय** (Supreme Court) की स्थापना की गई जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश, **सर एलिजाह इंपे** (Sir Elijah Impey) तथा तीन अवर न्यायाधीशों **चेंबर्स, लिमैस्टर** एवं **हाइड** की नियुक्ति की गई। उच्चतम न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपील लंदन स्थित प्रिवी काउंसिल (Privy Council) में की जा सकती थी। इस उच्चतम न्यायालय को प्राथमिक तथा पुनर्विचार संबंधी अधिकार दिये गए थे।
- मद्रास एवं बंबई प्रेसीडेंसियों को कलकत्ता प्रेसीडेंसी के अधीन कर दिया गया जिसका प्रमुख गवर्नर जनरल होता था। बंगाल में एक प्रशासक मंडल बनाया गया, जिसमें गवर्नर जनरल (अध्यक्ष के रूप में) तथा चार सदस्य नियुक्त किये गए। इन सदस्यों को गवर्नर या पार्षद कहा जाता था। इस मंडल में बहुमत से निर्णय होते थे, परंतु मत बराबर होने की स्थिति में अध्यक्ष अपना निर्णायक मत देता था।
- प्रशासक मंडल के सदस्यों का निर्वाचन पाँच वर्षों के लिये किया जाता था तथा ये केवल कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स की सिफारिश पर ब्रिटिश क्राउन द्वारा ही हटाए जा सकते थे।
- 1773 ई. के रेग्यूलेटिंग एक्ट के अनुसार, कंपनी के कर्मचारी किसी भी प्रकार का उपहार, दान या पारितोषिक ग्रहण नहीं कर सकते थे।
- इस एक्ट द्वारा गवर्नर जनरल का वेतन 25 हज़ार पौंड, गवर्नर का 10 हज़ार पौंड, उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश का 8 हज़ार पौंड तथा अवर न्यायाधीश का वेतन 6 हज़ार पौंड वार्षिक निश्चित कर दिया गया।
- किसी भी यूरोपीय शक्ति द्वारा सुदूर सभ्य लोगों के देश में प्रशासन करने का यह प्रथम प्रयत्न था। इस प्रकार रेग्यूलेटिंग एक्ट के माध्यम से एक ईमानदार शासन का आधारभूत सिद्धांत निर्धारित किया गया तथा इस नियामक अधिनियम के द्वारा ब्रिटिश भारत के लिये एक लिखित संविधान प्रणाली का सूत्रपात हुआ। वास्तव में, इस अधिनियम के माध्यम से 'एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों के स्थान पर एक संस्था के शासन' की स्थापना हो गई।

अध्याय
9

राष्ट्रवाद का उदय
(Rise of Nationalism)

राष्ट्रवाद कोई अचानक उत्पन्न होने वाली विचारधारा नहीं है बल्कि यह एक दीर्घकालिक विकासशील प्रक्रिया है। राष्ट्र के लिये एक ऐसी भावना का होना आवश्यक है जो व्यक्तियों के समूह को आत्मिक रूप से जोड़ती है और जब राष्ट्र व्यक्ति की पहचान बन जाता है तो राष्ट्रीयता जन्म लेती है और जब राष्ट्रीयता एक विचारधारा का रूप ले लेती है तब राष्ट्रवाद का उदय होता है। यही विचारधारा **राष्ट्रीय आंदोलन** या **स्वतंत्रता आंदोलन** की उत्पत्ति का महत्त्वपूर्ण कारक बनता है।

कुछ इतिहासकार भारत में राष्ट्रवाद की उत्पत्ति को **प्रेरण-अनुक्रियावाद** से स्पष्ट करते हैं जिसका आशय है- ब्रिटिश सरकार ने अपने हितों के लिये भारत में जो व्यवस्थाएँ लागू कीं, भारतीयों ने उसी पर अनुक्रिया कर राष्ट्रवादी भावना को विकसित किया। उल्लेखनीय है कि भारत में राष्ट्रवाद की उत्पत्ति एक आधुनिक संकल्पना मानी जाती है। भारत में जैसे-जैसे औपनिवेशिक शासन विभिन्न अवस्थाओं से गुज़रा वैसे-वैसे **भारतीय राष्ट्रवाद** भी विकसित होता गया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना बहुत तेज़ी से विकसित हुई और भारत में एक संगठित राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इसी समय **दिसंबर 1885** में **भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस** की स्थापना हुई, जिसके नेतृत्व में भारतीयों ने एक लंबा और साहसपूर्ण संघर्ष चलाया और अंततः 15 अगस्त, 1947 को देश को ब्रिटिश दासता से मुक्ति दिलाई।

9.1 भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण *(Causes of Rise of Indian Nationalism)*

भारत में राष्ट्रीय आंदोलन अथवा राष्ट्रवाद का उदय अनेक कारणों तथा परिस्थितियों का परिणाम था, जिन्हें निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है-

विदेशी आधिपत्य *(Foreign mastery)*

- आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद बुनियादी तौर पर विदेशी आधिपत्य की चुनौती के जवाब के रूप में उभरा। स्वयं ब्रिटिश शासन की परिस्थितियों ने भारतीय जनता में राष्ट्रीय भावना विकसित करने में सहायता की।
- राष्ट्रवाद की जड़ें भारतीय जनता के हितों तथा भारत में ब्रिटिश हितों के टकराव की उपज थीं। भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग ने यह अनुभव किया कि लंकाशायर के उद्योगपतियों तथा अंग्रेज़ों के दूसरे प्रमुख वर्गों के हितों के लिये उनके अपने हितों का बलिदान दिया जाता है।
- किसान अपने उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा भू-राजस्व के रूप में देने से असंतुष्ट थे तथा जब कभी किसान ज़मींदारों और सूदखोरों के दमन के खिलाफ विद्रोह करते तब पुलिस तथा सेना कानून व्यवस्था के नाम पर उनको कुचल दिया करती थी।
- दस्तकार और शिल्पी वर्ग ने यह महसूस किया कि सरकार विदेशी प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देकर उनको तबाह कर रही थी तथा उनके पुनर्वास के लिये कोई प्रयास नहीं किया जा रहा था।
- 20वीं शताब्दी में आधुनिक कारखानों, खदानों तथा बागानों के मज़दूरों ने जब कभी **मज़दूर ट्रेड यूनियन,** हड़ताल, प्रदर्शन तथा संघर्ष आदि के द्वारा स्वयं की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया, तब सरकार का पूरा तंत्र उनके खिलाफ उठ खड़ा होता था।
- समाज के कई वर्गों ने यह भली-भाँति समझ लिया था कि बढ़ती बेरोज़गारी का समाधान केवल तीव्र औद्योगीकरण से संभव है जो एक स्वाधीन सरकार द्वारा किया जा सकता है।
- स्वयं ब्रिटिश शासन भारत के आर्थिक पिछड़ेपन का प्रमुख कारण बनता गया और यह भारत के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा राजनीतिक विकास में प्रमुख बाधक तत्त्व बन चुका था।
- उभरते हुए भारतीय पूंजीपति वर्ग ने भी जल्द ही यह समझ लिया कि वह साम्राज्यवाद के कारण नुकसान उठा रहा था। अपने शैशव अवस्था में उन्हें सरकार की सक्रिय सहायता की ज़रूरत थी लेकिन कोई सहायता नहीं मिली और उन्हें विदेशी पूंजीपतियों की असमान प्रतियोगिता में खड़ा होना पड़ा।